SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता का अध्ययन"

अंजना गंगवार
शोधार्थिनी
शिक्षक शिक्षा विभाग
एस0एस0 कॉलेज, मुमुझु आश्रम, शाहजहाँपुर।

डॉ0 मीना शर्मा
विभागाध्यक्ष
शिक्षक शिक्षा विभाग
एस0एस0 कॉलेज, मुमुझु आश्रम, शाहजहाँपुर।

सारांश

सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि संसाधनों की उपलब्धता को बढ़ाया जाए, शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण दिया जाए, और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए। दूसरी ओर, गैर सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए उनके व्यक्तिगत रुचियों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम में विविधता लाने और नियमित मूल्यांकन के माध्यम से उनकी सृजनात्मकता का सही मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। सृजनात्मकता को कुशाग्रता या प्रतिभाशाली का पर्याय नहीं माना जा सकता इसलिए हर प्रतिभाशील बालक को सृजनात्मक मानने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए। व्यवहार से ही व्यक्ति की पहचान होती है अतः कौन बालक कितना सृजनशील है इसकी पहचान उसके द्वारा प्रदर्शित व्यवहार के आधार पर ही की जानी चाहिए। दूसरे शब्दों में किसी बालक के व्यवहार द्वारा सृजनशीलता से सम्बन्धित गुणों एवं विशेषताओं का जितना परिचय हमें मिलता है हम उसे बालक को उसी सीमा तक सृजनशील बालक की संज्ञा देते हैं। सृजनात्मकता को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए उचित वातावरण एवं देख–रेख की आवश्यकता होती है। यदि इसे उचित प्रशिक्षण, शिक्षा तथा अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्रदान न किये जायें तो वह व्यर्थ चली जाती है। इसके अतिरिक्त जैसा की हम पहले कह चुके है, सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है, इस पर कुछ एक प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों का एकाधिकार नहीं होता। हम में से प्रत्येक व्यक्ति कुछ–न–कुछ मात्रा में सृजनात्मकता योग्यताएं रखता है। शोध में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए – सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दः– सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों, विद्यार्थियों एवं सृजनात्मकता क्षमता

1. प्रस्तावना :–

सृजनात्मकता किसी भी समाज के विकास और उन्नति का एक प्रमुख आधार है। बच्चों की सृजनात्मकता का विकास उनके भविष्य की नींव रखता है। सरकारी और गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण है कि हम यह जान सकें कि कौन से कारक उनके सृजनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं और इन्हें कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है।

सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के शैक्षणिक वातावरण में काफी अंतर होता है। सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी एक आम समस्या है। कई बार वहाँ पुस्तकों, प्रयोगशालाओं, और अन्य शैक्षणिक सामग्रियों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं होती। इसके विपरीत, गैर सरकारी विद्यालयों में आधुनिक संसाधन और सुविधाएँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती हैं। स्मार्ट क्लासरूम, लैपटॉप, प्रोजेक्टर और अन्य डिजिटल उपकरणों का प्रयोग आम होता है। इन संसाधनों का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर पड़ता है।

शिक्षण विधियाँ भी सृजनात्मकता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सरकारी विद्यालयों में पारंपरिक शिक्षण विधियाँ, जैसे कि व्याख्यान और पाठ्यपुस्तकों पर निर्भरता अधिक होती है। वहीं, गैर सरकारी विद्यालयों में प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा, ग्रुप एक्टिविटीज, और डिजिटल शिक्षण तकनीकों का अधिक उपयोग होता है। जब विद्यार्थियों को रटने के बजाय समस्याओं को हल करने, विचार करने और नया करने का मौका मिलता है, तो उनकी सृजनात्मकता में निखार आता है।

सरकारी विद्यालयों का पाठ्यक्रम अधिक सख्त और निर्धारित होता है, जिससे सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों के लिए समय और संसाधन कम मिलते हैं। इसके विपरीत, गैर सरकारी विद्यालयों में पाठ्यक्रम लचीला होता है और वहाँ कला, संगीत, नाटक, खेल आदि सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों पर जोर दिया जाता है। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती हैं और उन्हें अपनी प्रतिभाओं को निखारने का मौका देती हैं।

विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचियाँ और पारिवारिक पृष्ठभूमि भी सृजनात्मकता को प्रभावित करती है। सरकारी विद्यालयों में अधिकतर विद्यार्थी मध्यम या निम्न आय वर्ग से आते हैं, जहाँ शिक्षा के प्रति जागरूकता कम हो सकती है। इसके विपरीत, गैर सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि अधिक सशक्त होती है, जिससे उन्हें सृजनात्मक गतिविधियों में अधिक प्रोत्साहन मिलता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण और उनकी शिक्षण में नवाचार का समावेश विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाता है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की नियमितता और उनकी सरकारी नीति पर आधारित शिक्षण विधियाँ उनके सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने में एक सीमा तक बाधक हो सकती हैं। वहीं, गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण तकनीकों का प्रशिक्षण मिलता है और उन्हें स्वतंत्रता भी मिलती है जिससे वे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बेहतर तरीके से प्रोत्साहित कर सकते हैं।

इस प्रकार, सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि शिक्षा के विभिन्न आयामों को किस प्रकार से सुधारकर हम विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को अधिकतम बढ़ावा दे सकते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

सृजनात्मकता किसी भी समाज के विकास और नवाचार का आधार होती है। बच्चों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि समाज की प्रगति के लिए भी आवश्यक है। सरकारी और गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें यह समझने में मदद करता है कि विभिन्न शैक्षणिक वातावरण और संसाधन किस प्रकार उनके सृजनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

सृजनात्मकता बच्चों में नवाचार और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करती है। यह उन्हें आत्म–प्रकाश और आत्म–संतुष्टि की ओर प्रेरित करती है। सृजनात्मकता का महत्व केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं हैय यह समाज की समृद्धि और प्रगति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के बीच संसाधनों, शिक्षण विधियों और शैक्षणिक वातावरण में महत्वपूर्ण अंतर होता है। सरकारी विद्यालयों में अक्सर संसाधनों की कमी होती है, जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में आधुनिक संसाधनों और तकनीकों का अधिक उपयोग होता है। इन असमानताओं का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह समझना महत्वपूर्ण है ताकि इन समस्याओं का समाधान किया जा सके।

इस अध्ययन के परिणाम शिक्षा नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करेंगे कि किस प्रकार के शैक्षणिक सुधारों की आवश्यकता है। यह अध्ययन सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के बीच की खाई को पाटने में सहायक होगा, जिससे सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सके।

शिक्षकों की भूमिका विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण होती है। इस अध्ययन से यह समझने में मदद मिलेगी कि शिक्षकों को किस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को अधिक प्रभावी ढंग से प्रोत्साहित कर सकें।

सरकारी और गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करेगा कि किस प्रकार के शैक्षणिक वातावरण और शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों और विद्यालय प्रशासन के लिए मूल्यवान दिशा–निर्देश प्रदान करेगा, जिससे वे शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी कदम उठा सकें। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल शिक्षा क्षेत्र के लिए, बल्कि समाज के समग्र विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी बच्चों को उनकी सृजनात्मकता को

विकसित करने का समान अवसर मिले, इस अध्ययन के निष्कर्षों का उपयोग शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए किया जाना चाहिए।

3. सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन :–

सैनी किरन (2017) : ने श्रवण दिव्यांग बालकों के आत्म अभिमान, समायोजन एवं सृजनात्मकता का अध्ययन किया अपने अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के श्रवण दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्म अभिमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के श्रवण दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के श्रवण दिव्यांग विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

कुमार प्रशांत एवं सिंह गुन्जन (2016) – ने सामान्य एवं मूकबधिर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये–

1. सामान्य एवं मूकबधिर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. सामान्य एवं मूकबधिर विद्यार्थियों की आन्तरिक जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. सामान्य एवं मूकबधिर विद्यार्थियों के आन्तरिक प्रबन्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

दिव्य, शिखा (2011) – ने ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव'' नामक विषय पर शोध किया। जिसका उद्देश्य यह लिया कि– सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना। निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थक अन्तर बताता है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों से अधिक होती है।

4. समस्या कथन :–

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता का अध्ययन

5. चरों का परिभाषीकरण :–

5.1 सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय :–

सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय एक ऐसा शैक्षिक संस्थान होता है जो सरकार द्वारा संचालित किया जाता है और निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता है। ये विद्यालय आमतौर पर नगरों और गाँवों में स्थित होते हैं और बालिकाओं और लड़कों के लिए शिक्षा की सुविधा प्रदान करते हैं। इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य एक समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली को सामाजिक और आर्थिक रूप से सहयोग प्रदान करके साकार करना होता है।

5.2 गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय :–

गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय अक्सर शिक्षा के क्षेत्र में उद्यमी और समर्थ व्यक्तियों द्वारा स्थापित किए जाते हैं, जो अपने समुदाय में शिक्षा के स्तर को बढ़ावा देने के लिए समर्पित होते हैं। इन विद्यालयों की प्रशासनिक और शैक्षिक नीतियों का निर्धारण संगठन के बोर्ड या प्रबंधन समिति द्वारा किया जाता है। गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या और शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता अक्सर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के मुकाबले कम होती है। हालांकि, कुछ गैर–सरकारी विद्यालय विशेष शैक्षणिक या विद्यार्थी संबंधित क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्रदान करते हैं।

5.3 विद्यार्थी :–

विद्यार्थी एक व्यक्ति होता है जो शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल, कॉलेज, या अन्य शैक्षिक संस्थान में पढ़ाई करता है। विद्यार्थी किसी उम्र या शैक्षिक स्तर के हो सकते हैं, जैसे कि छोटे बच्च स्कूल जाते हैं, विद्यार्थियों को कॉलेज जाने का अवसर मिलता है, और फिर उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय जाते हैं। विद्यार्थी अपने शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पढ़ाई करते हैं और ज्ञान अर्जित करते हैं।

5.4 सृजनात्मक क्षमता :–

''सृजनात्मकता'' एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति नए, मौलिक और उपयोगी विचारों, समाधान, या कलात्मक अभिव्यक्तियों का निर्माण करता है। यह एक ऐसा गुण है जो किसी भी क्षेत्र में नवाचार और प्रगति को संभव बनाता है। सृजनात्मकता केवल कला और साहित्य तक सीमित नहीं हैय यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यवसाय, शिक्षा, और रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सृजनात्मकता क्षमता के मुख्य तत्व

1. **''मौलिकता''** : सृजनात्मकता में विचारों और समाधान की नवीनता और अनोखापन शामिल होता है। इसका मतलब है कि विचार या समाधान पहले से मौजूद नहीं होते और यह पूरी तरह नया होता है।
2. **''उपयोगिता''** : सृजनात्मक विचार या समाधान न केवल नया होता है, बल्कि वह प्रासंगिक और उपयोगी भी होता है। यह किसी समस्या को हल करने या किसी उद्देश्य को पूरा करने में सहायक होता है।
3. **''लचीलापन''** : सृजनात्मकता में व्यक्ति विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने और विभिन्न परिस्थितियों में अलग–अलग तरीकों से समस्याओं का समाधान करने की क्षमता रखता है।
4. **''विचारशीलता''** : इसमें गहरे विचार और विश्लेषण शामिल होते हैं, जहाँ व्यक्ति पारंपरिक विचारों को चुनौती देकर और नए दृष्टिकोण अपनाकर समाधान खोजता है।

सृजनात्मकता क्षमता के उदाहरण

- **''कलात्मक क्षेत्र में''** : एक चित्रकार द्वारा बनाई गई एक अनूठी पेंटिंग या एक लेखक द्वारा लिखी गई एक नई कहानी।
- **''विज्ञान और प्रौद्योगिकी में''** : एक वैज्ञानिक द्वारा खोजी गई नई तकनीक या किसी इंजीनियर द्वारा विकसित किया गया नया उपकरण।

- **''व्यवसाय में''** : एक उद्यमी द्वारा शुरू किया गया नया व्यापार मॉडल या उत्पाद।

सृजनात्मकता एक बहुआयामी गुण है जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार और प्रगति को बढ़ावा देता है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि समाज की समृद्धि और विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने और विकसित करने के लिए एक अनुकूल वातावरण और सही संसाधनों की आवश्यकता होती है।

6. अध्ययन के उद्देश्य :–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

7. अध्ययन की परिकल्पनाऐं :–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

8. आंकड़ों संग्रहण के उपकरण :–

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया हैं।

9. न्यादर्श :–

वर्तमान लघु शोध हेतु 100 सरकारी एवं 100 गैर सरकारी विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

10. उपकरण :–

सृजनात्मक क्षमता मापनी – बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

11. परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

तालिका संख्या – 1

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मक क्षमता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	100	64.19	18.58	0.548	***
गैर सरकारी	100	62.57	18.80		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मक क्षमता को दर्शाया गया है। तालिका में सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान, मानक विचलन 64.87 एवं 18.58 प्राप्त हुआ है जबकि गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 62.57 एवं 18.80 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 1.28 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्राऐं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	100	63.49	19.01	1.25	***
गैर सरकारी	100	60.03	19.38		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता को दर्शाया गया है। तालिका में सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं का मध्यमान, मानक विचलन 63.49 एवं 19.01 प्राप्त हुआ है जबकि गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 60.03 एवं 19.38 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 1.25 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

12. निष्कर्ष :–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

13. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

कुमार प्रशांत एवं सिंह गुन्जन (2016):'' सामान्य एवं मूकबधिर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन'', शोध पत्र यूनिवर्स जरनल ऑफ ऐजूकेशन एण्ड ह्यूमनिटीज, अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, बुलन्दशहर उ0प्र0।

सैनी किरन (2017) : ''श्रवण दिव्यांग बालकों के आत्म अभिमान, समायोजन एवं सृजनात्मकता का अध्ययन'', शोध प्रबन्ध (शिक्षा), गांधी विद्या मन्दिर विश्वविद्यालय, सरदार शहर, राजस्थान।

दिव्य, शिखा (2012) : ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव'', लघु शोध प्रबन्ध (शिक्षा) महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/27

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अंजना गंगवार एवं डॉ0 मीना शर्मा

For publication of research paper title

"सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com